प्रेस विज्ञप्ति

28 सितम्बर 2015

रणदीप सिंह सुरजेवाला, मीडिया प्रभारी, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी, ने निम्नलिखित ब्यान जारी किया है:-

"प्रधानमंत्री जी ने ट्विटर, फेसबुक और इंस्टाग्राम को हमारे नए पडोसी की उपमा प्रदान की है । गुजरात व महाराष्ट्र में सोशल मीडिया व इन्टरनेट टेलीफोनी पर दिनों तक प्रतिबन्ध लगाने वाले मोदी जी ने जमीनी हकीकत भूला कर प्रीत का प्रदर्शन इस प्रकार किया मानों नूतन गृह प्रवेश हो । पर यह भूल गये की सोशल मीडिया व टेलीकाम/इन्टरनेट की व्यापक क्रांति के पहलुओं को भारत बहुत पहले ही आत्मसात कर चुका है ।

मोदी जी द्वारा भारत की तरक्की की नई परिभाषा पेश की गई । आभास यह हुआ कि गूगल में फूडग्रेन्स टाइप करते ही 265 मिलियन टन के भंडार के फोटो इंस्टाग्राम पर पोस्ट कर दिये गए हों और अब फेसबुक पर लहलहा रही फसले डिजिटल फ़ूड के रूप में 125 करोड़ भारत वासियों को परोसी जाने वाली हैं । और इतनी समृद्धि पाकर घर का मुखिया घड़ियाली आंसू भी न बहाये तो फिर कथानक रोचक नहीं होता । अपने अतीत में माँ के त्याग पर गर्व तो होता है मगर 16 महीनों में (16 मई, 2014 के बाद आज तक) एक बार भी 90 वर्षीय माँ से ना मिलना और अपने अच्छे दिनों में माँ को साथ न रखना उससे भी अधिक पीड़ादायी प्रतीत होता हैं ।

देश के प्रधानमंत्री वास्तविक दुनिया की दीवार लाँघ कर आभासीय दुनिया (virtual world) में प्रवेश कर गए हैं इसलिए भारत की वास्तविक परिस्थितियाँ दीवार के पार से दिखाई नहीं देतीं । भारत का उद्योग ठप और ठंडा व्यापार दिखाई नहीं देता, किसानों का काँटों पे करवटे बदलना, फसलो की घटती पैदावार, रेलों की रफ़्तार का पटरी से उतरना, घटते रोजगार से बढ़ती निराशा, यह सब उस मोटी दीवार से देखा भी नहीं जा सकता । वित्त मंत्रालय की ताजा माह की रिपोर्ट बताती है कि एग्रीकल्चर ग्रोथ 0.2 % पर आ गई, फ़ूड ग्रेन्स प्रोडक्शन 265 मिलियन टन से घटकर 252 मिलियन टन पर आ गया ।

कोर इंफ्रास्ट्रक्चर इंडस्ट्री की ग्रोथ 2015- 2016 के पहले क्वाटर की 2.4 % पर सिमट गई जो जून 2014 में 8.7 % थी , सीमेंट का प्रोडक्शन 2.6 % पर रह गया, स्टील का प्रोडक्शन

12% की ग्रोथ से घटकर 4.9% पर आ गया, इलेक्ट्रिसिटी की प्रोडक्शन ग्रोथ 0.2% पर आ गई, हमारा एक्सपोर्ट पिछले आठ माह से 15% की दर से घट रहा है ।

यहाँ यह भी जानना प्रासंगिक होगा कि देश में 992.4 मिलियन टेलिफोन उपभोग्ता UPA सरकार के समय थे और 75% से अधिक टेली डेन्सिटी थी ।

प्रधानमंत्री जी, इंस्टाग्राम और भारतीय-ग्राम में शब्दों की समानता हो सकती है मगर आभासीय और असलियत का अंतर भी उतना ही है । भारत के गांव ऑप्टिकल फाइबर से जुड़ने के लिए बेताब हैं मगर ग्रामीण सरकारी उपेक्षा से बेबस भी हैं ।

प्रधान मंत्री जी, भ्रष्टाचार को अपने मंत्रियो और मुख्यमंत्रियों से अलग रखकर परिभाषित नहीं किया जा सकता और न ही कुछ बड़े घरानों को बहुत बड़ा लाभ पहुंचा कर अपने दामन को उजला बताया जा सकता है ।

देश ने आज तक इतना आत्ममुग्ध मुखिया नहीं देखा जो अपने कार्यो की खुद समीक्षा कर स्वयं को सर्वश्रेष्ठ साबित कर देता हो । इतना ही नहीं कर्मों के परिणाम के पहले ही उनके फलों का आहार कर गीता को भी गलत परिभाषित करता है ।

प्रधानमंत्री जी, देश में ताजा अवनति के अंधियार का समाधान यहीं तलाशना होगा, विदेशी चकाचौंध में उसका मिलना संभव नहीं ।

निवेश की संभावना की विदेश में तलाश तारीफे काबिल तो हो सकती है मगर देश में तेजी से फ़ैल रही निराशा को भी राह दिखाने की कोशिश होनी चाहिए। सिर्फ समारोह का साफा साथ रखने से प्रसिद्धि तो हासिल की जा सकती है मगर प्रगति परिणामों में परिलक्षित करनी होगी ।

29 विदेशी प्रवासों की जो प्रतिध्वनि आती है वह परिणाम मूलक कम और प्रचार प्रेरक ज्यादा प्रतीत होती है । सिलिकॉन वेळी और डायस पार्क में हिंदुस्तान के युवाओं की प्रगति का परचम पंद्रह माह में तैयार नहीं हुआ, यह तो 15 वर्षो से अधिक समय से वहाँ लहरा रहा है ।

मोदी जी, अपनी लकीर बढ़ाने की अपेक्षा खींची हुई लकीर में खामियां निकालकर खुद को खुदा निरूपित नहीं किया जा सकता । प्रेरणा पाने के लिए मार्क और पेचाई जैसे युवा आपके सम्मुख हैं जिन्होंने अपने काम को बखूबी अंजाम दिया और उनकी प्रसिद्धि

स्वतः ही सिद्ध हो गई । कुछ और नही तो देश के महापुरुषों की वो वाणी को ही याद कर लें जिन्होंने कहा था कि, “बातें कम, काम ज्यादा ” न कि जो मोदी जी करतें हैं, “बातों का व्यापार, काम की नही दरकार ” ।”